eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

# शंकराचार्य के दार्शनिक तथा शैक्षिक विचारों का अध्ययन

**[1]डॉ0(श्रीमती) सविता सिंह**
[1]सह प्रोफेसर शिक्षा संकाय, ए0के0 (पी0जी0) कॉलेज, शिकोहाबाद, जिला –फिरोजाबाद (उ0प्र0)

Received: 01 Jan 2018, Accepted: 15 Jan 2018 ; Published on line: 31 Jan 2018

## Abstract

आज जब हम वेदान्त दर्शन पर विचार करते हैं तो हमारा तात्पर्य मुख्य रूप से शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त से ही होता है। भारतीय दर्शन में अद्वैतवाद का नाम आते ही शंकराचार्य का नाम जिहवापटल पर दौड़ जाता है। वेदान्त दर्शन की समस्त शाखा एवं उपशाखाओं में सर्वाधिक महत्व शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त का ही है।

शंकर का वेदान्त भारतीय चिन्तन धारा का चरमोत्कर्ष है। आज भारत में जितने भी दर्शन एवं धर्म मानव जीवन में उतरे हैं उन पर वेदान्त व्याख्याकारों में शंकराचार्य का नाम अग्रगण्य है। उन्होंने प्रस्थानत्रयी की बौद्धिक एवं दार्शनिक व्याख्या की है। शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त का सारा श्लोकार्य में इस पकार व्यक्त किया गया है ''ब्रहा ही सत्य है, जगत मिथ्या है और जीव ब्रह्म ही है, उससे मित्र नहीं'' शंकराचार्य के अद्वैत वाद का सकारात्मक प्रभाव भारतीय संस्कृति पर पड़ा हैं। संपूर्ण ब्रह्माण्ड की एकता और अनेकता का ज्ञान कराकर उन्होंने हमें अपनी अनन्त शक्ति में परिचित कराया है।

इस अनन्त शक्ति की अनुभूति हेतु जिस साधन मार्ग की चर्चा शंकराचार्य ने की है, उसके लिये न केवल भारत अपितु सारा संसार उनका चिरऋणी है। वास्तव में शंकराचार्य का दर्शन समस्त धर्म एवं दर्शनों का मूल हैं, उसे यदि सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक दर्शन कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज समाज जिस वर्गहीन, धर्मनिरक्षेप समाजवादी व्यवस्था पर विचार करता है वह शंकराचार्य के दार्शनिक तथा शैक्षिक विचारों की अभेद दृष्टि के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

**मुख्य शब्दावली–** तत्व–मीमांसा, ज्ञान–मीमांसा, आधार मीमांसा, पारमार्थिक सत्ता।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

## प्रस्तावना

भारत अपनी कला, संस्कृति, दर्शन आदि की गौरवशाली परम्पराओं पर सदैव से गर्व करता रहा है, परन्तु हमारी प्राचीन परम्परा एवं मूल्य धूमिल से हो गये हैं। आधुनिकता की भ्रमिक अवधारणा पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण तर्क प्रधान चिन्तन आदि के कारण अतीत में अविश्वासन एवं 'स्व' में अनास्था आदि कारणों से हमारे प्राचीन मूल्य प्रदूषित हो गये हैं। स्वयं पर अनास्था का परिणाम है आत्मनाश अर्थात् अपने आदर्शो एवं मूल्यों, अपनी संस्कृति, चिन्तन प्रणाली का परित्याग कर उसके स्थान पर बाहरी या विदेशी चिन्तन प्रणाली प्रतिष्ठित करना। इसके फलस्वरूप हमारे पुरातन मूल्य दब गये हैं। वस्तुत वे पूर्णतः नष्ट नहीं हुये हैं वरन विघटित हो गये है। वेदान्त दर्शन को भारतीय दर्शन की पराकाष्ठा माना जाता है। वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदों के गूढ एवं विस्तृत दार्शनिक चिन्तन का अंतिम सार ही वेदान्त दर्शन हैं। वेदान्त दर्शन के तीन आधार हैं। उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और भगवतगीता इन तीनों आधारो को वेदान्त दर्शन, की 'प्रस्थानत्रयी' कहा जाता है।

### अध्ययन की आवश्यकता

अतः प्रस्तुत अध्याय में शंकर अद्वैत कालीन शिक्षा के उद्देश्यों को वर्तमान शिक्षा के साथ जोड़ने का प्रयास किया है। शंकर अद्वैत कालीन शिक्षा के उन आदर्शों को वर्तमान शिक्षा के साथ जोड़ना आवश्यक हो गया है जिनका अनुसरण करके व्यक्ति एक सभ्य, संस्कृत नागरिक बनकर समाज में अपना अमूल्य योगदान दे सकें। गुरू के प्रति आदर की भावना, माता–पिता के प्रति कर्तव्य, नैतिकता की भावना पैदा करना शंकर की अद्वैतवादी शिक्षा द्वारा ही सम्भव है।

### अध्ययन का महत्व

वर्तमान शिक्षा प्रणाली द्वारा प्राप्त शिक्षा को देश की परिस्थितियों के अनुरूप बनने के लिये शंकर अद्वैत कालीन शिक्षा का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। इस अद्वैत कालीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक के अंदर अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करना है। बालक की अन्तर्निहित शक्तियों के प्रभाव को समझने के लिये शंकर अद्वैत कालीन शिक्षा का महत्व बढ़ जाता है।

### समस्या कथन

शोध पत्र में प्रस्तुत घु–शोध अध्ययन में शंकराचार्य के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का अध्ययन की समस्या पर विचार किया जायेगा।

### अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के अधोलिखित उद्देश्य है।

1. शंकराचार्य के अद्वैतवदी ब्रह्म विषयक विचारों का अध्ययन करना।
2. शंकराचार्य के वेदान्त एवं शिक्षा दर्शन का ऐतिहासिक अनुक्रम व शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन।
3. शंकर अद्वैत कालीन शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृति व शैक्षिक दशा का अध्ययन।
4. आधुनिक शिक्षा प्रणाली की समीक्षा करते हुये प्राचीन, आध्यात्मिक, नैतिक व चारित्रिक माननीय मूल्यों को शंकर की अद्वैत वाद शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में जोड़ना।
5. राष्ट्र की प्राचीन सस्कृति व गौरव को चुनौती देने वाले कारकों को दर्शाना तथा उनके निराकरण के उपायों की विवेचना करना।
6. वर्तमान समय में भौतिकवादी संसार में शिक्षा के बदलते उद्देश्यों, लक्ष्यों आयामों को वास्तविक जीवन मूल्यों व आदर्शो के साथ सम्बन्धित कर वर्तमान शिक्षा के साथ जोड़ना।

**प्रत्ययों का परिभाषीकरण**

- **शंकराचार्य के दार्शनिक विचार**

  इसके अंतर्गत वेदान्त का अर्थ, साहित्य, आचार्य परम्परा, शंकराचार्य का परिचय, उनकी रचनायें तत्व विचार जीव मुक्ति प्रमाण विचार, ब्रह्म विचार, आध्यात्मिक विचार इत्यादि के विषय में वर्णन करने का प्रयास किया जायेगा।

- **शंकराचार्य के शैक्षिक विचार**

  इसके अंतर्गत शंकर अद्वैतवाद शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, अनुशासन, गुरू–शिष्य सम्बन्ध, विद्यालय इत्यादि का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जायेगा।

- **अध्ययन की परिसीमायें**

  1. प्रस्तुत अध्ययन में प्राचीन शिक्षा प्रणाली के समस्त धाराओं व व्यवस्था, उद्देश्य व उनके मुख्य पक्षों का संक्षिप्त अवलोकन ही मात्र प्रस्तुत किया जायेगा।
  2. शंकराचार्य का अद्वैतवाद शिक्षा का क्रमिक इतिहास, शैक्षिक बिन्दुओं एवं दार्शनिक पहलुओं को ही स्पर्श किया जायेगा।
  3. शंकराचार्य के जीवन परिचय प्रस्तुत करते समय मात्र सामान्य दृष्टि ही डाली जायेगी।

4. शंकर अद्वैतवाद शिक्षा की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालकर शिक्षा में हो रहे परिवर्तनों के साथ तालमेल व बढ़ती कुप्रवृत्तियों को रोकने के लिये सुझाव प्रस्तुत किये जायेगें।

## शोध में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत अध्ययन शंकर के दार्शनिक तथा शैक्षिक विचारों का अध्ययन में ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करना है। अतएव इसके लिये ऐतिहासिक विधि पर्याप्त प्रतीत होती है।

ऐतिहासिक अनुसंधान में आँकड़ों की प्राप्ति के साधन।

1. प्राथमिक साधन।
2. द्वितीयक साधन।

### 1. प्राथमिक साधन

इनका सम्बन्ध प्रदत्त के मूल व मौलिक साधनों से होता है। वे साधन जो घटना, व्यक्ति या संख्या के विषय में प्रथम साक्षी का कार्य करते हैं, प्राथमिक साधन कहलाते हैं।

- **लिखित साधन**
- **मौखिक साधन**
- **कलात्मक उपलब्धियाँ**
- **अचेतन प्रमाण पत्र**

इन अवशेषों के विषय में तत्कालीन घटना, काल विशेष या व्यक्ति विशेष के विषय में प्राथमिक ज्ञान प्राप्त होता है।

### 2. द्वितीय साधन

जिन व्यक्तियों ने न तो मौलिक घटना को देखा है और न ही उसमें सक्रिय रूप से भाग लिया है उनके द्वारा लिखित अथवा वर्णित पुस्तकें, लेख आदि सूचना के द्वितीयक साधन हैं। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत प्राथमिक और द्वितीयक दोनों श्रोतों का यथा सम्भव संग्रह कर आकलन करने का प्रयास किया गया है।

## शंकराचार्य का जीवन परिचय

शंकराचार्य का जन्म दक्षिण भारत के केरल राज्य में कालडी नामक ग्राम में 788 ई0 में नम्बूद्री ब्राह्मण के घर में हुआ। उनके पिता का नाम शिवगुरू और माता का नाम विशिष्टा था। उनके गुरू गोविन्दाचार्य थे। शंकराचार्य ने अपने गुरू से वेदान्त के प्रमुख सिद्धान्तों की शिक्षा प्राप्त की थी। आठ वर्ष की आयु

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

में शंकर का उपनयन संस्कार हो गया था, पर इसके पूर्व ही इन्होंने पण्डितों को आश्चर्यचकित करते हुये अनेक धर्मग्रन्थों प्रवीणता प्राप्त कर ली थी। शंकर ने आठ वर्ष की अवस्था में चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया, बाहर वर्ष की अवस्था में सभी शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया, सोलह वर्ष की अवस्था में पददर्शन का सांगोपांग अध्ययन कर ब्रह्मासूत्र, उपनिषद् और भगवदगीता पर भाष्य लिखा। शंकराचार्य का मन बाह्य जगत से पूर्णतया विरक्त हो गया। अब उन्होंने सन्यास ग्रहण करने का निश्चय कर लिया। शंकर नर्मदा तट पर पहुँचे और वहाँ उन्होंने विख्यात गौड़पाद के आत्मज्ञानी शिष्य गोविन्दपाद की की शिष्यता ग्रहण की। दीक्षा के प्श्चात गुरूश्रेष्ठ गोविन्दपाद ने शकर को भगवान वेदव्यास के वेदान्त सूत्रों पर भाष्य लिखने का आदेश दिया। उन्होंने इस महत्वपूर्ण कार्य को सम्पादित किया। आचार्य शंकर को 'जगद्गुरू' के रूप में भारतीय समाज द्वारा अभिनन्दित किया जाना उनके शैक्षिक मूल्यांकन का ही प्रतिफल है।

**शंकराचार्य के द्वारा लिखे गये भाष्य एवं स्रोत ग्रन्थ**

शंकराचार्य ने वृहदारण्यक, छान्दोगय तैत्तरी, ऐतरेय, ईश, कठ, केन, प्रश्न, मुण्डक और माण्डूक्य उपनिषद् तथा भगवतगीता, ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखे। उन्होंने विवेक चूडामणि उपदेश साहस्त्री, श्ताश्लोकी, दशाश्लोकी, पंचकारिका, आत्मबोध, अपरोक्षानुभूति, सौन्दर्य लहरी, आनन्द लहरी, गणेश स्रोत, देवी स्रोत और विष्णु सहस्त्रनामा आदि पर स्रोत ग्रन्थ लिखे। अपने अदभुत अद्वैत दर्शन द्वारा सोर देश को प्लावित करके तथा धर्म में युगान्तरकारी सुधार ले आने के उपरान्त आचार्य शंकर सन् 830 ई0 में 32 वर्ष की आयु में हिमालय पर्वत पर केदारनाथ में महासमाधि में लीन हो गये। आज सैकडों वर्षो के बाद भी भारत के धार्मिक जीवन पर उनके व्यापक एवं प्रभावपूर्ण कार्यो का सफल प्रभाव पूर्णतः विद्यमान हैं। शंकराचार्य का अद्वैतवाद हमें निरन्तर प्रेरित करता रहे एवं उनके द्वारा मारा मार्गदर्शन होता रहे यही हमारी एकान्तिक कामना है।

**शंकराचार्य के दार्शनिक विचार**

**तत्व मीमांसा**

**(क) आत्म विचार**

वेदान्त दर्शन केवल एक सत्ता को मानता है। वह सत्ता आत्मा है। आत्मा ज्ञान स्वरूप है। दृष्टि (ज्ञान) ही आत्मा का स्वरूप है।

- **साक्षात् प्रत्यक्ष–** आत्मा के अस्तित्व के पक्ष में शंकराचार्य का विचार हैं– सभी मुनष्य अनुभव करते हैं कि मैं हूँ।

- **अखण्डनीयता**– आत्मा का अस्तित्व अखण्डनीय है। अर्थात यदि कोई मनुष्य आत्मा है, इस पर संशय करें तो उसे बताना चाहिए कि उसका संशायिता होना ही आत्मा को सिद्ध करता है क्योंकि संशय ज्ञान स्वरूप है।
- **स्वयं सिद्धता**– अनुभव होने के कारण आत्मा स्वय सिद्ध है। वह सभी प्रमाणों का आधार है।

**(ख) ब्रह्मविचार**

शंकराचार्य के अद्वैतवाद का प्रतिपाद्य विषय ब्रह्म की एकमात्र सत्ता की स्वीकृति है। यहॉ ब्रह्म की अवधारणा सीधे उपनषिदों से ली गयी है।

- **तदस्थ लक्षण**

किसी वस्तु का आन्तरिक स्वरूप न होते हुये भी अन्य वस्तुओं से उसका भेद करने वाला लक्षण तटस्थ लक्षण कहलाता है। शंकराचार्य ने ब्रह्मसूत्र के द्वितीय सूत्र जन्माद्यस्य यतः की व्याख्या में इसी तथ्य को उद्घाटित किया है। उनका कथन है कि इस जगत का जन्मादि (जन्म, धारण और विनाश) जिस तत्स से होता है वह ब्रह्म है।

- **स्वरूप लक्षण**

शंकराचार्य ब्रह्म के स्वरूप लक्षण का कथन करके उसके वास्तविक स्वरूप को उद्घाटित करते हैं। वे इस दृष्टि से ब्रह्म को सच्चिदानन्द करते है।

(ग) ईश्वर का स्वरूप

शंकर ने अपने दर्शन में ईश्वर को गायोपहति ब्रा कहा है। ईश्वर माया के द्वारा विश्व की सृष्टि करता है। माया ईश्वर की शक्ति है शंकर का ईश्वर विचार 'निमित्तोपादानेश्वरवाद' है।

**ज्ञान–मीमांसा**

**(क) ज्ञान का स्वरूप**– ज्ञान का लक्षण देते हुये शंकराचार्य ने कहा है कि ज्ञान प्रमाण जन्य है। प्रमाण यथाभूत वस्तु विषयक होता है, अतः ज्ञान कारक, अकारक तथा अन्यथा कारक नहीं होता है। वह वस्तुतंत्र है क्योंकि वह भूतवस्तु विषयक है। ब्रह्मज्ञान निर्विशेष है।

**(ख) प्रमा**– प्रमा का शब्दिक अर्थ है प्रमाणों से उत्पन्न अर्थात् सही ज्ञान। अद्वैत वेदान्त में एक प्रकार से ब्रह्म का ज्ञान ही प्रमा है। प्रमा के कारण या असाधारण कारण को प्रमाण कहते हैं। अनाधिगत (अज्ञात, पहले से न जाने हुये), अबाधित अर्थ विषयक ज्ञान प्रमा है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

**(ग) परोक्ष ज्ञान के प्रकार–** सभी वेदान्ती व्यावहारिक सत्ता के क्षेत्र में उन छः प्रमाणों को स्वीकार करते हैं जिन्हें भट्ट मीमांसा में मान्यता मिली है। ये प्रमाण हैं प्रत्यक्ष अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति तथा अनुलब्धि। इनमें से शब्द को वैदिक प्रमाण या श्रुति प्रमाण तथा अन्य को लौकिक प्रमाण कहा जाता है। प्रायः शंकर कहते है कि ब्रह्म का ज्ञान श्रुति–प्रमाण से ही हो सकता है।

**(घ) अनिर्वचनीयख्याति–** वेदान्त के अज्ञानवाद को अनिर्वचनीय ख्याति वाद या अध्यायवाद कहा जाता है। अनिर्वचनीय ख्यातिवाद के अनुसार अज्ञान और अज्ञान के विषय दोनों अनिर्वचनीय हैं। (अज्ञान के विषय को भी हम न सत् कह सकते हैं और न असत् के लिये सर्प सत् नहीं है।

**(ड) अविधा–निवृत्ति–** अविधा निवृत्ति ब्रह्म–रूप है। ''ब्रह्मभावश्य मोक्षः''–मोक्ष ब्रह्मभाव है। सकल प्रपंच का अधिष्ठान ब्रह्म है। ब्रह्म ही सकल प्रपंच अध्यस्त है या अविधाकृत हैं।

**आचार मीमांसा**

**(क) मोक्ष–विचार–** मोक्ष अविधानिवृत्ति है। वह आत्मरूप या ज्ञान रूप है। मोक्ष से अज्ञान नष्ट हो जाता है। वह अकर्मण्यावस्था है। मोक्षावस्था में कोई कर्म संभव ही नहीं है।

**(ख) मोक्ष का स्वरूप–** शंकराचार्य के दर्शन में मोक्ष ऐसा कोई आदर्श नहीं है जो हमसे पृथक है और जो निकट या सुदूर भविष्य में प्राप्त होने वाला है। गोदा या मुक्ति आत्मा को किसी नवीन अवस्था की प्राप्ति नहीं है। यह आत्मा के नित्यस्वरूव का ही साक्षात्कार है। इस प्रकार मोक्ष न तो परमार्थतः उत्पन्न होता है और न पहले से अप्राप्त है। यह शाश्वत सत्य का अनुभव है। मोक्ष बहाभाव या ब्रहासाक्षात्कार है (ब्रहामावश्य मोक्षः) यह जीव द्वारा अपनी ही आत्मा का साक्षात्कार है।

**शंकराचार्य के शैक्षिक विचार**

**शिक्षा के उद्देश्य–** अद्वैत वेदान्त की केन्द्रीय समस्या ब्रह्म की धारणा है। इस दर्शन में ब्रह्म तत्व के अन्वेषण पर बल दिया जाता है। अद्वैत वेदान्त दर्शन को उपनिषदों सर्वाधिक प्रमणित टीका माना गया है। अद्वैत वेदानत समस्त दर्शनों का मुकुटमणि है। इसमें चेतन ब्रह्म का प्रतिपादन बडी कुशलता से किया गया है। अद्वैत वेदान्त दर्शन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य ब्रह्म साक्षात्कार है। अतः शिक्षा का उद्देश्य वास्तविक सत्ता को पहचानने की योग्यता प्रदान करना है जिससे ब्रह्मज्ञान या मोक्ष प्राप्त होता है। शंकराचार्य ने अद्वैत वेदान्तीय शिक्षा में अन्य के साथ–साथ एकता की भावना के विकास को भी महत्व दिया है। पं0 बल्देव उपाध्याय ने इंगित किया है कि ''अद्वैत वेदान्त की शिक्षा चरमावसान है वसुवैध कुटुम्बकम्।

**पाठ्यक्रम–** अद्वैत वाद में ज्ञानबर्द्धक और अध्यात्मावाद की प्रधानता होने से पाठयक्रम में दर्शन, तर्कशास्त्र, धर्मशास्त्र, नीतिशाास्त्र एवं आचारशास्त्र आदि का समावेश किया गया है।

तीन सत्तायें मानव जीवन के तीनों पक्ष कहें जा सकते हैं, जो निम्न प्रकार

- **प्रतिभासिक सत्ता–** यह सत्ता आभास मात्र है, इसमें वास्तविकता नहीं है। प्रारम्भ में जो इसकी प्रतीति होती है, वह भ्रमात्मक एवं मिथ्या है, जैसे अँधेरे में रस्सी सॉप मालूम होती है।
- **व्यावहारिक सत्ता–** हमारे दैनिक व्यवहार में जो वस्तुयें हमारी अपनी इन्द्रियों के अनुभव में आती है, वह सत्ता है। हम उनमें पदार्थो को देखते हैं और उपयोग करते हैं, परन्तु यह व्यवहार का ही रूप हैं। इनमें स्वायित्व नहीं होता है।
- **पारमार्थिक सत्ता** – वेदान्त दर्शन के अनुसार यही वास्तविक सत्ता है। यह विकास में भी बाधक नहीं होती। यह ब्रह्म की ही सत्ता है, जो शाश्वत एंव सनातन है।

**व्यावहारिक शिक्षा विषय–** भाषा, गणित, चिकित्सा, सामाजिक विषय विज्ञान में रूचि रखने वाले छात्रों के लिये भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान आदि विषय होने चाहिये।

**व्यवहार की क्रियाओं के लिये**

आसन, व्यायाम, भोजन बनाने की क्रिया तथा संयम सम्बन्धी बातों एवं स्वास्थ्य का ज्ञान पाठयक्रम में होना जरूरी है।

**आध्यात्मिक पाठयक्रम–** इसके लिये पाठयक्रम में वेद, उपनिषद्, दर्शन, यज्ञ, ज्ञान, भक्ति सम्बन्धी विषय होते हैं। दर्शन एवं धर्म विषय पाठयवस्तु का प्रावधान होगा। इन पारमार्थिक विषयों के साथ इसकी क्रियाओं में यम, नियम, आसन, प्राणायाम आदि यौगिक क्रियाओं का समावेश होना चाहिये।

**शिक्षण विधियाँ**

शिक्षण विधियों के क्षेत्र में वेदान्त का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है। शंकराचार्य ने ज्ञान प्राप्ति की क्रिया का ''विवेक चूडामणि'' तथा ''उपदेश साहस्त्री'' में वर्णन किया है।

**नित्यानित्यवस्तु विवेक**

नित्य ब्रह्म रूप वस्तु तथा अनित्य या मिथ्या जगत् रूप अवस्तु के बारे में विवेचन की क्षमता का उदय होना प्रथम साधन है।

**इटामुत्रार्थफलभोगविराग**

इस लोक तथा परलोक के समस्त भोगों में वैराग्य हो जाना

**शमादिष्टसम्पत्ति**

'शम' आदि छह प्रकार की सम्पत्ति से युक्त होना, जिनमें शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान और श्रद्धा का भाव आता है।

मुमुक्षुत्व

मुक्ति की तीव्र इच्छा का होना चतुर्थगुण है जो कि नितान्त अनिवार्य है।

गुरू–ब्रह्म के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कराने के लिये अध्यारोप तथा अपवाद विधियों का प्रयोग किया जाता है, जो कि निम्न हैः–

**(क) अध्यारोप विधि–** अध्यारोप विधि में वस्तु और अवस्तु अपेक्षित है। रस्सी में सॉप का अध्यारोप होने पर रस्सी वस्तु है, सॉप अवस्तु इसी प्रकार ब्रह्म में जगत का अध्यारोप है तो ब्रह्म वस्तु है, जगत अवस्तु।

**(ख) अपवाद विधि –** इस विधि में युक्तियों एवं तर्को का काम होता है। तर्क के आधार पर यह सिद्ध किया जाता है कि आत्मा न तो शरीर है, न मन है, न बुद्धि है।

रूचि और क्षमता के अनुसार छात्र तीन प्रकार के होते हैं।

- उत्तम
- मध्यम
- निकृष्ट

अतः शिक्षण पद्धति इस पद्धति से निम्नलिखित तीन प्रकार की होगी।

- ज्ञान केन्द्रित विधि
- उपासना केन्द्रित विधि
- क्रिया केन्द्रित विधि

**शिक्षक–** शिक्षक को हमारे आध्यात्मिक शास्त्रों में बड़ा ही महत्व दिया गया है। देवगुरू और धर्मगुरू का पद मध्यस्थ है। अँधेरें में जिस प्रकार व्यक्ति को कुछ दिखायी नहीं देता है ठीक उसी प्रकार से अज्ञानरूपी अंधकार में मनुष्य को बिना ज्ञानमय नेत्रों के अपनीब आत्मा के निजी गुणों की पहचान नहीं हो पाती। अतः इसके लिये गुरू और शिष्य सम्बन्ध की बात है तो कहा जा सकता है कि एक के बिना दूसरा अपूर्ण है। अद्वैतवाद में शिक्षक को महत्वपूर्ण माना गया है शंकराचार्य के अनुसार गुरू को ब्रह्म ज्ञानी होना चाहिये, उसे निर्लोभ, निर्व्यसन एवं पूर्णकाम काम होना चाहिये। उसे ब्रह्म दृष्टा

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

होना चाहिये। शंकराचार्य की दृष्टि से गुरू के दो कार्य हैं। शिष्य को व्यावहारिक जीवन के लिये तैयार करना और उसे ना। इनमें आध्यात्मिक जीवन की प्राप्ति कराना।

**शिक्षार्थी–** अद्वैत वेदान्त के अनुसार प्रत्येक छात्र अनन्त ज्ञान एवं शक्ति का स्रोत है, उनमें जो शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक भिन्नता दिखाई देती है वह कर्मजनित है। अद्वैत वेदान्त छात्र को मात्र शरीर ही नहीं मानता। उनके अनुसार बालक ब्रह्म है वह अनन्त शक्ति सम्पन्न है।

**विद्यालय–** शंकराचार्य के युग में व्यावहारिक शिक्षा की व्यवस्था परिवार एवं समुदायों में होती थी और आध्यात्मिक शिक्षा की गुरूगृहों में।

## अनुशासन

अनुशासन का अर्थ आत्म संयम है। अनुशासन में अनु अर्थात् पीछे चलना और शासन का अर्थ नियन्त्रण में रहना है।

**मुक्त्यात्मक अनुशासन** – बालक को स्वतंत्रता देने से उसमें नैतिकता का विकास होगा और वह अनुशासित रहेगा यह कार्य अध्यापक के मार्गदर्शन में होना चाहिये।

**प्रभावात्मक अनुशासन–** आदि शंकराचार्य ने बालक की प्रकृति की चार अवस्थायें बताई हैः–

1. क्षिप्त, 2. मूढ, 3. विक्षिप्त, 4. एकाग्रता

1. क्षिप्तावस्था

   इस अवस्था में बालक अपनी इन्द्रियों के पूर्ण रूप से अधीन रहता है। अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर सकता।

2. मूढ़

   इस अवस्था में इन्द्रियों को सुख्दाद लगने वाला कार्य किया जाता है।

3. विक्षिप्त

   इस अवस्था में इन्द्रियों पर सीमित रूप से नियतंण होने लगता है।

4. एकाग्रतावस्था

   एकाग्रता सबसे उच्च स्थिति है, उसे इन्द्रिय, मन, बुद्धि का बोध हो जाता है।

## अध्ययन की उपयोगिता

शंकराचार्य की अद्वैत कालीन शिक्षा उपयोगिता निम्न बिन्दुओं के द्वारा व्यक्त की जा सकती है।

- आज चोरी, हत्या तथा बुराईयों से भरे हुये अशान्तिमय समाज को अद्वैत कालीन मौलिक अवधारणाओं की विशेष आवश्यकता है। जिसमें समाज में अंहिता, सत्य और शान्ति लायी जा सकें।
- वर्तमान शिक्षा प्रणाली को अद्वैत वेदान्त दर्शन के मूल्यों आदर्शो के साथ तालमेम करके एवं उसमें परिवर्तन लाकर सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्य बनाये रखने मे अद्वैत कालीन शिक्षा बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।
- अद्वैत कालीन शिक्षा के आदर्शो, मूल्यों को व्यावहारिक रूप देकर छात्रों का विकास इस दिशा में करना जहाँ सर्वत्र मानवता, समानता, बन्धुत्व, सहयोग, प्रेम, सहानुभूति की भावना प्रज्जवलित हो।
- अद्वैतकालीन शिक्षा का अनुसरण करके आज भी मनुष्य–मनुष्य में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, लडाई–झगड़े आदि को रोका जा सकता है।
- अद्वैत वेदान्त की अभेद दृष्टि, अनेकता में एकता की शिक्षा आज भी भारतीय संस्कृति के सातव्य को बनाये रखने में सक्षम एवं उपयोगी है।
- आज विश्व–शान्ति एवं अन्तर्राष्ट्रीयता के आदर्श की पृष्ठभूमि में अद्वैतवाद बहुत उपयोगी रहा है।
- अद्वैतकालीन शिक्षा में भारतीय मूल्यों एवं आदशों का अपना एक अलग स्थान है जिससे वर्तमान में व्यक्ति भारतीय संस्कृति की मन व आत्मा में उतर कर देख सकेगा।

**भावी अध्ययन हेतु सुझाव**

- भावी शोधकर्ता द्वारा शंकर के अद्वैतवाद की वर्तमान समय में उपादेयता पर शोध किया जा सकता है।
- शंकराचार्य के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का किसी अन्य दार्शनिक के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन भावी शोध हेतु किया जा सकता है।
- अद्वैत कालीन शिक्षा के माध्यम से शिक्षक, छात्र व समाज में जागरूकता पैदा करना पर अध्ययन करके भावी शोध किया जा सकता है।

- शंकर के दर्शन में नैतिकता तथा धर्म के सिद्धान्त पर भी भावी शोध कार्य किया जा सकता है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


1. स्वामी ब्रह्मस्थानन्द ''श्री शंकराचार्य की वाणी'' रामकृष्ण मठ प्रकाशन, धन्तोली नागपुर सन् 2009 प्र0स0 3–7
2. शर्मा, चन्द्रधरः ''भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलन'' मोतीाल बनारसी दास पब्लिकेशन, बनारस–सन् 2003 पृ0सं0 244, 249, 252, 257
3. स्वामी, निलिखानन्द ''विवेकानन्दः एक जीवनी'' 14वां संस्करण कोलकाता–सन् 2003
4. बंदिष्ठे, डी0डी0 : ''भारतीय दार्शनिक निबन्ध'' मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी–सन् 1995 पृ0सं0 201, 203, 209, 212
5. पाण्डेय, संगम लाल : ''भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण'' सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद सन् 1997 पृ0सं0 244,251, 261, 265
6. Kumar, N. (2005) Life of the adventures the Retrievedon August, 2016 From "http://www.exaticindiaart.com/article/Shankarachary.
7. That Hindu, (Friday Review, Faith) April 20, 2015
8. The Secret Doctaine" Vol. I.P. 522
9. http:/wwwbiblicaltraining.org/library/philosophical-theology-sankara-ramanuja/introduction to hindisium/timothy-tennent.
10. http://www.dishq.cog/saints/Sankara.htm.